

एक अचंभा ! दुनिया में पहली बार:

वैज्ञानिकों* की दिमागी समझ (जो गलत दिशा में है) का पोल-खोल अभियान!

जानिए! वैज्ञानिकों की गलत जानकारी के कारण से आप क्या गलत जानते हैं और आपके बच्चों (विधार्थियों) को क्या गलत पढ़ाया जा रहा है?

*वैज्ञानिकों के विषय: भूगोल (खगोल से सम्बंधित); खगोल और भौतिक विज्ञान (सभी प्रकार की किरणें और जो भी कुछ सूर्य/तारों से निकलता है)।

Subject of the Scientists: Earth Sciences (related to Astronomy), Astronomy, Astrophysics, Cosmology, Space Exploration and Physics related to all kinds of the rays and whatsoever our Sun (or a star) releases to the space.

खोज की चुनौती की तारीख: 7 अप्रैल 2007

चुनौती का विषय: नई खोज; जो ऊपर लिखे विषयों पर है।

खगोल (सूर्य और ग्रह चलन) ASTRONOMY (Working mechanism)



यह लाल कागज के कुछ पन्ने जो ऊपर लिखे विषयों पर मेरी जानी गई खोज की एक मात्र झलक हैं; वो वैज्ञानिकों की दिमागी समझ का पोल खोल रही है। मेरी खोज से वैज्ञानिकों की समझ को जानकर, आपकी आँखें और दिमाग भी झटके से खुल जायेगा; यह जान कर कि वैज्ञानिक **बुद्धि-जाम** के कारण; क्या ऐसा भी दिमागी समझ रखते हैं; जबकि उनका दिमाग ज्यादा विकसित है। झलक जानकारी आगे है, लेकिन उदाहरण के लिए एक तथ्य नीचे लिखा है: -



नीचे लिखी घटनाओं Phenomena का कारण; वैज्ञानिक, क्या टकराने के सिवा और कोई कारण नहीं जानते?

- पृथ्वी का चन्द्रमा; पुराण युग में पृथ्वी से किसी बड़े ग्रह व क्षुद्र ग्रह के टकराने से बना।
- पृथ्वी पर पानी धूमकेतुओं के टकराने से पृथ्वी को मिला।
- डायनासॉर और उस जैसे विशाल काया के जीवों की विलुप्ति का कारण है कि 250 लाख वर्ष पहले पृथ्वी से एक विशाल क्षुद्र ग्रह टकराया था।
- ग्रह शुक्र किसी विशाल ग्रह के टकराने से उल्टी दिशा में घूम रहा है।
- ग्रह अरुण किसी विशाल ग्रह के टकराने से अपनी धुरी को लेटा कर घूम रहा है।
- सभी ग्रहों का धुरी कोण झुकाव; ग्रहों का किसी ग्रह व क्षुद्र ग्रह के टकराने से है।
- और बहुत सी ऐसी घटनाएँ phenomena है जिनका कारण वैज्ञानिक किसी टकराव को मान रहे हैं, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है।

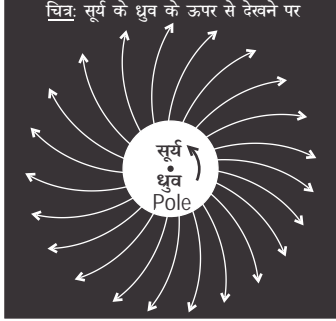
खोजी: ऊपर लिखी सभी घटनाएँ phenomena टकराने से नहीं है; वास्तव कारण कुछ और है; जिसे मैंने यहाँ पर हिंदी अनुवाद में भी लिखा है परन्तु सभी की विस्तार में व्याख्या मेरी वेबसाइट पर है।

मेरी मुख्य खोजों* की झलक जो वैज्ञानिकों की जानकारी को गलत साबित करती हैं।

Highlights of my discovery claims*, which prove knowledge of the World/Scientists as wrong and false.

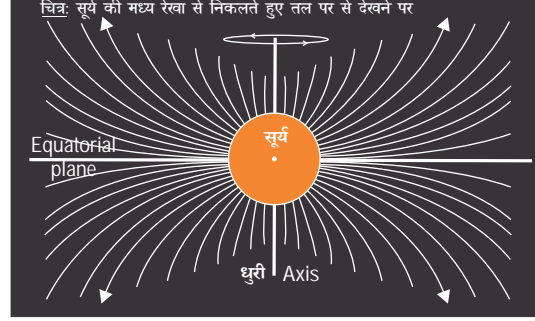
***वैज्ञानिकों का विषय:** भूगोल (खगोल से सम्बंधित); खगोल और भौतिक विज्ञान (सभी प्रकार की किरणों और जो भी कुछ सूर्य/तारों से निकलता है)।

Subject of the Scientists: Earth Sciences (related to Astronomy), Astronomy, Astrophysics, Cosmology, Space Exploration and Physics related to all kinds of the rays and whatsoever our Sun (or a star) releases to the space.



2. भौतिक विज्ञान (प्रकाश किरणों और जो कुछ भी सूर्य/तारा से निकलता है)

PHYSICS (Whatsoever the Sun/Star releases to space including all kinds of rays).



सौरमंडल के बारे में मेरी की गई खोजें:

About my understandings/discoveries over and what is inside the Solar System:

- वैज्ञानिकों के अनुसार; सूर्य एक विशाल घूमते हुए बादलीय पदार्थ निबुला Nebula के भीतरी भाग से बना है। यह वैज्ञानिकों का जानना सही है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार; सौरमंडल के ग्रह घूमते हुए बादलीय निबुला के अलग-अलग खण्डों से बने हैं। वैज्ञानिकों की यह जानकारी गलत है। ग्रह सीधे किसी बादलीय खण्ड से नहीं बने। बादलीय निबुला से कण व धूल आदि बन कर एक विशाल चपटे छल्ले में सूर्य के गिर्द हो जाने से; इन चपटे छल्लों के कणों का आपस में जुड़ जाने से बने हैं। (जैसा कि अब वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड में कुछ तारों के गिर्द चपटे छल्ले और ग्रह देख रहे हैं)।
- वैज्ञानिकों के अनुसार; सूर्य आज भी अपने पहले जन्म घुमाव से घूम rotate रहा है; जो घुमाव गति उसे घूमते हुए निबुला से मिली थी। वैज्ञानिकों की यह जानकारी गलत है। जन्म घुमाव गति हमेशा के लिए नहीं थी; अब सूर्य अपनी बाहर की छोड़ी हुई भौतिक कणों की किरणों और स्वतंत्र कणों की उल्टी धकेल back thrust से घूम रहा है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार; सभी ग्रह अपने जन्म घुमाव से अब स्वयं automatic घूम रहे हैं और अब कोई ऐसी शक्ति नहीं जो ग्रहों को घुमा रही हो। वैज्ञानिकों की यह जानकारी गलत है। जन्म घुमाव गति हमेशा के लिए नहीं थी; अब सभी ग्रह; अपनी और सूर्य की भौतिक कणों की किरणों से घूम rotate रहे हैं।
- वैज्ञानिकों के अनुसार; सभी ग्रहों को परिक्रमण चक्कर गति शक्ति घूमते rotating हुए बादलीय निबुला से मिली थी और आज भी उसी जन्म परिक्रमण गति momentum से ग्रह सूर्य के गिर्द चक्कर लगा रहे हैं। वैज्ञानिकों की यह जानकारी गलत है। ग्रह सीधे किसी बादलीय निबुला से बने ही हैं तो, ग्रहों की परिक्रमण गति को निबुला की घुमाव गति से जोड़ना ही गलत है। ग्रहों को अब, घूमते हुए सूर्य की भौतिक कणों की किरणों और उनकी स्वयं की भौतिक किरणों, ग्रहों को परिक्रमण के लिए धकेल push रही हैं।
- ग्रह शुक अपनी धुरी पर उल्टी दिशा में घूम रहा है। वैज्ञानिक इसका कारण समझते हैं कि ग्रह शुक कभी किसी बड़े ग्रह से टकराया होगा, तब ऐसा है; वैज्ञानिकों की यह जानकारी गलत है। ग्रह शुक पर पृथ्वी की अपेक्षा 90 गुना घना वातावरण है। सूर्य की भौतिक किरणें भीतर जाते वक्त घने वातावरण के कारण मुड़ जाती है और वह ग्रह को उल्टी दिशा में घुमा देती है।
- ग्रह अरुण अपनी धुरी को लेटा कर घूम रहा है। वैज्ञानिक इसका कारण समझते हैं कि ग्रह अरुण कभी किसी बड़े ग्रह से टकराया होगा, तब ऐसा है; वैज्ञानिकों की यह जानकारी गलत है। ग्रह अरुण का भीतरी ठोस भाग दो ग्रहों का आपस में जुड़ कर लम्बूतरे आकार का है। ऐसे आकार वाला ग्रह सूर्य की भौतिक

कणों की किरणों के कारण से सीधा नहीं घूम सकता; उसे लेट कर ही घूमना होता है।

- वैज्ञानिकों के अनुसार; जो ग्रह अपना धुरी कोण झुका कर घूम रहे हैं; उनके धुरी कोण झुकाव का कारण, कोई टकराव को मान रहे हैं। वैज्ञानिकों की ऐसी समझ गलत है। यदि कोई ग्रह टकरा कर अपना धुरी कोण उलटता है, तो वह कुछ सदियों बाद फिर से अपनी सही धुरी कोण पर आ जाता है। ग्रहों का धुरी कोण झुकाव उनके किसी भीतरी या बाहरी कारण से है। बिल्कुल गोल पिंड sphere ग्रह जो कि एक ही पदार्थ से बना हो, वो बिल्कुल सीधा शून्य डिग्री के कोण पर घूमेगा। इसी कारण से ग्रह बुध Mercury तकरीबन शून्य डिग्री पर (सीधा) घूमता है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार; ग्रहों की सूर्य से दूरी (और उपग्रहों की ग्रहों से दूरी) उनके परिक्रमण चक्कर से है यानी केंद्र पसारक बल centrifugal force से है और दूसरा कोई कारण नहीं जो ग्रहों को सूर्य से दूर रखता हो। वैज्ञानिकों की यह जानकारी गलत है। केंद्र पसारक बल centrifugal force के अतिरिक्त और भी दो शक्तियाँ हैं जो ग्रहों को सूर्य से दूरी पर रख रही हैं। एक है, सूर्य की भौतिक कणों की किरणों और कण यानी सोलर विंड solar wind की धकेल और तीसरी एक दूसरे को धकेल; सूर्य की भौतिक कणों की किरणों की और ग्रहों की भौतिक कणों की किरणों की धकेल (जैसा कि चुम्बक के एक जैसे ध्रुव दो चुम्बकों को चुम्बकीय किरणों से दूरी पर रखते हैं)।
- वैज्ञानिकों ने ग्रह चलन नियम से ग्रहों की औसत घनत्वता mean density जानी है। पृथ्वी की औसत घनत्वता, जिसे पृथ्वी पर प्रयोग से जाना है, वो सही है लेकिन बाकि के सभी ग्रहों की जानी गई औसत घनत्वता पूर्ण रूप से सही न होकर गलत है। इस जानकारी को दो ग्रह बुध और शुक सोलर विंड की धकेल के कारण से सिद्ध करते हैं, जिनकी असली औसत घनत्वता वैज्ञानिकों की जानी गई औसत घनत्वता से कहीं अधिक है।
- ग्रह शनि के गिर्द विशाल कणों और धूल आदि के चपटे छल्ले हैं। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि यह ऐसा इसलिए है कि यह बादलीय पदार्थ से ऐसे ही बने थे और कुछ कहते हैं कि हमें कारण पता नहीं। मेरी खोज के अनुसार चपटे छल्ले ग्रह शनि की अपनी छोड़ी हुई भौतिक कणों की किरणों के कारण से हैं।
- ग्रह बुध Mercury और शुक Venus बहुत धीरे घूमते हैं। जबकि बहुत विशाल ग्रह बृहस्पति Jupiter बहुत तेज घूमता है। वैज्ञानिक इसका कारण नहीं जानते हैं। इसके कारण की व्याख्या आगे इस प्रश्न के अध्याय में है।
- ग्रह बृहस्पति Jupiter बहुत बड़ा क्यों है? इसका कारण वैज्ञानिक नहीं जानते हैं। इसके कारण की व्याख्या आगे इस प्रश्न के अध्याय में है।
- बहुत बड़े ग्रह (बृहस्पति, शनि, अरुण और वरुण) सूर्य के निकट न होकर बहुत दूर क्यों हैं? वैज्ञानिक इसका कारण नहीं जानते हैं। इन ग्रहों की

अपनी बाहर को छोड़ी हुई भौतिक किरणों अधिक मात्रा में हैं जो सूर्य की भौतिक किरणों से टकरा कर अपने को सूर्य से दूर रख रही हैं (जैसे वो चुम्बक के एक जैसे ध्रुवों से निकलती भौतिक चुम्बकीय किरणें आपस में धकेल रख कर चुम्बकों को दूर रखती हैं)।

15. नीचे लिखे प्लूटो के कुछ कारण हैं, जिन कारणों को वैज्ञानिक नहीं जानते है या फिर जाने गए कारण सही न होकर गलत हैं।

- प्लूटो का परिक्रमण चक्कर दूसरे ग्रहों से भिन्न क्यों है?
- प्लूटो का जोड़ीदार ग्रह कैरोन Charon कैसे जुड़ा?
- प्लूटो के उपग्रह कैसे बने?
- प्लूटो पर चार धब्बे क्या हैं?
- प्लूटो की बर्फीली सतह पर अलग प्रकार के पैटर्न हैं, वो कैसे और क्यों बने?

उपर के सभी कारणों को सही मूल जानकारी से जाना गया है और जिसकी व्याख्या आगे प्लूटो के अध्याय के अंतर्गत है।

16. ग्रह अरुण का परिक्रमण रास्ता अंडाकार है और वैज्ञानिक इसका कारण नहीं जानते हैं। ग्रह अरुण के जो चपटे छल्ले हैं उन पर कभी सूर्य की भौतिक किरणों की धकेल thrust कम और कभी ज्यादा होती है, जिस कारण ग्रह अरुण सूर्य के कभी समीप और कभी दूर जाता है, जो रास्ते को एक अंडाकार रूप में रखता है।

17. ग्रह अरुण परिक्रमण करते वक्त कभी तेज गति से और कभी कम गति से आगे को बढ़ता है और वैज्ञानिक इसका कारण नहीं जानते हैं। ग्रह अरुण के जो चपटे छल्ले हैं उन पर कभी सूर्य की भौतिक किरणों की परिक्रमण धकेल push कम और कभी ज्यादा होती है, जिस कारण ग्रह अरुण की परिक्रमण गति कभी धीमी और कभी तेज होती है।

18. सूर्य और सूर्य का सभी परिवार एक ही तल पर है, जो तल सूर्य की मध्य रेखा में से गुजरता है। वैज्ञानिक इसका कारण मान रहे हैं कि सौरमंडल, एक तेज़ घूमते हुए बादलीय पदार्थ से बना है और वो इतना तेज़ घुमा कि एक चपटे आकार में गया, इसलिए सूर्य और सूर्य का परिवार एक ही तल पर हैं। वैज्ञानिकों का यह जाना गया कारण दिखता सही है, परन्तु सही न होकर गलत है। यदि ऐसा होता तो करोड़ों सालों में जो टकराव हुए हैं तब परिवार के बहुत से सदस्य इस तल से ऊपर व नीचे को होते। सूर्य की भौतिक कणों की किरणें अपने मध्य रेखा तल पर दर्पण परछाई पैटर्न बनाती है जो सूर्य के सभी परिवार को इस तल पर रहने को बाध्य करती हैं।

19. चन्द्रमा Moon पृथ्वी का उपग्रह कैसे बना? वैज्ञानिक आज भी अपना माथा फोड़ रहे हैं, यह जानने के लिए कि पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा कैसे बना। गलत दिशा में सोच और जानकारी से आज तक कुछ भी सही जानकारी नहीं जानी गई, जबकि सही मूल जानकारी से यह जानना बहुत ही सरल है। पुराण युग में चन्द्रमा कभी पृथ्वी के पीछे छोटा ग्रह था। धीरे-धीरे भार सामग्री बढ़ने से चन्द्रमा सूर्य की ओर को बढ़ा और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में आ कर; सूर्य की परिक्रमण छोड़, पृथ्वी की परिक्रमण करने को बाध्य हो गया।

नोट: जुलाई 2015 में समाचार पत्र के माध्यम से पता चला है कि इस चन्द्रमा के कारण phenomenon को समझने के लिए ISRO (India) and NASA (USA) मिल कर 400 करोड़ रूपए से अधिक लागत से एक अंतरिक्षयान, ग्रह शुक्र की ओर को भेज रहे हैं; जबकि यह कारण बिना किसी अंतरिक्षयान या यंत्र से जाना जा सकता है; जैसा मैंने अपनी खोज के अंतर्गत लिखा है।

20. चन्द्रमा के बारे में बहुत सी पहेलियाँ हैं, जिसका उत्तर वैज्ञानिकों को अभी तक नहीं मिला है। उन सभी पहेलियों को मेरी खोज के अंतर्गत जाना गया है।

21. वैज्ञानिकों के अनुसार धूमकेतु Comet का परिक्रमण रास्ता अंडाकार है; जबकि यह ऐसा नहीं हो सकता। धूमकेतु का रास्ता क्विपर पट्टी तक या उससे कुछ आगे तक दिखने व समझने से रास्ता अंडाकार समझा जा रहा है लेकिन सच्चाई में रास्ता एक अलग प्रकार का है जिसे धूमकेतु के अंतर्गत मैंने अपनी

वेबसाइट में लिखा है।

22. सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण कारण जो वैज्ञानिक सही न जान कर गलत जानते हैं वो है **किरणों** की सही न जानना व समझना। वैज्ञानिक पहले किरणों को ऊर्जा तरंग wave के सिवा और कुछ नहीं समझते थे, लेकिन अब किरणों के दो गुणों की बिन बजा रहे हैं कि किरण एक तरंग भी है और कण भी; किरणों में दोनों गुण साथ-साथ हैं। किरण कोई जीव जाती नहीं, जैसे के मनुष्य करता है (गंगा गए तो गंगा राम; यमुना गए तो यमुना दास)। किरणों में एक ही गुण है कि वह भौतिकीय कणों से बनी हैं और इसकी सच्चाई मेरी जानी गई खोज जो ग्रह चलन पर है, वो सिद्ध करती है।

23. वैज्ञानिक जब एक किरण को, कणों के रूप में समझते हैं तो वह किरण के कणों को एक बन्दुक की गोली से निकले महीन कणों (छरों) की तरह समझ कर अपने को धोखे में रखने के सिवा और कुछ नहीं कर रहे हैं। मेरी खोज के अनुसार भौतिक कणों की किरण ऐसे आगे को बढ़ती Propagate है; जिसकी व्याख्या प्रकाश किरणों के अध्याय के अंतर्गत है।

24. वैज्ञानिकों के मुताबिक सौरमंडल भौतिकहीन है। यह जानकारी अचम्भा दर्शाती है कि जब वैज्ञानिक जानते हैं कि सूर्य एक सेकेण्ड में 4,200,000,000 टन अपनी परमाणु ऊर्जा सामग्री कम कर देता है तो वह सामग्री किसी और रूप में सौरमंडल में आ जाती है तो सौरमंडल कैसे भौतिकहीन हो सकता है? मेरी खोज के मुताबिक सौरमंडल तो क्या, पूरे का पूरा ब्रह्माण्ड ही भौतिकीय है। जो हमे नहीं भी दिखता वो भी भौतिकीय है।

25. सूर्य से बाहर की ओर को निकलते हुए स्वतंत्र कण क्यों गतिवर्धक accelerate हो कर आगे को बढ़ते हैं? इसका कारण वैज्ञानिक नहीं जानते हैं और इसका कारण मेरी खोज से जाना गया है।

26. ग्रहों पर वातावरण के घुमाव circulation के कई कारण हैं; जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण कारण सूर्य और ग्रहों की अपने भौतिक कणों की किरणें हैं। किसी वैज्ञानिक ने आज तक इस कारण को नहीं जाना व ना ही इसके बारे में सोचा है। ग्रह शुक्र Venus का वातावरण तेज़ गति से और उल्टी दिशा में घूम रहा है, इसका कारण है, सूर्य से आती किरणें जो वातावरण के घनेपन के कारण से मुड़ जाती है और वह ग्रह को उल्टी दिशा में घुमाती हैं। तेज़ वातावरण के घूमने का कारण है; ग्रह शुक्र का सूर्य के समीप होना।

नोट: जुलाई 2015 में समाचार पत्र के माध्यम से पता चला है कि इस वातावरण के कारण phenomenon को समझने के लिए ISRO (India) and NASA (USA) मिल कर 400 करोड़ रूपए से अधिक लागत से एक अंतरिक्षयान, ग्रह शुक्र की ओर को भेज रहे हैं; जबकि यह कारण बिना किसी अंतरिक्षयान या यंत्र से जाना जा सकता है; जैसा मैंने अपनी खोज के अंतर्गत लिखा है।

सौरमंडल के अतिरिक्त जो ब्रह्माण्ड है; उसके बारे में मेरी की गई खोजें।

About my understanding/discoveries over and what is inside the Universe (other than the Solar System).

1. वैज्ञानिकों की धारणा के मुताबिक हमारा ब्रह्माण्ड एक महॉ घने और बहुत छोटे (मटर के दाने जितने) आकार के पदार्थ के फट कर फूलने से शुरू हुआ; जिसका नाम वैज्ञानिकों ने रखा बिग बैंग Big Bang. मेरी खोज के अनुसार हमारा ब्रह्माण्ड एक महॉ विशाल ब्लैक होल Black hole के फटने से शुरू हुआ।

वैज्ञानिकों की मानी गई धारणा को सिर्फ दो ही कारण बहुत हैं, जो सिद्ध करते हैं, कि वैज्ञानिकों की जानकारी गलत है। कोई भी पदार्थ जो इतना अधिक घना हो, वो बाहरी शून्य दबाव के कारण हो ही नहीं सकता और दूसरा कारण कि बहुत वैज्ञानिक मानते हैं कि हमारा ब्रह्माण्ड बनता और बिगड़ता है। यह सच है, लेकिन इनता घना और छोटा पदार्थ दुबारा से विनाश के बाद नहीं बन सकता है; जबकि महॉ विशाल ब्लैक होल Black hole दुबारा बन सकता है।

2. वैज्ञानिकों ने ब्रह्माण्ड का बनने और चलन के चार सिद्धांत fundamental जाने हैं (जिनकी जानकारी इंटरनेट पर है)। मेरी जानी गई

खोज के मुताबिक ब्रह्माण्ड का बनने और चलन का एक ही सिद्धांत fundamental है कि ब्रह्माण्ड भौतिकीय है Universe is materialistic. जैसे कि धार्मिक मान्यता के अनुसार दुनिया को बनाने और चलाने वाला एक ही भगवान हो सकता है, अन्य नहीं। उसी तरह विज्ञान के अनुसार ब्रह्माण्ड के बनने और चलाने का एक ही सिद्धांत है; न कि चार। जाने गए चार सिद्धांत मुख्य सिद्धांत न हो कर मेरे मुख्य सिद्धांत की शरवा सिद्धांत हैं।

3. ब्रह्माण्ड में कुछ तारों के गर्द बहुत विशाल ग्रह हैं; जिनका वैज्ञानिकों ने नाम दिया है भुनते हुए ग्रह व गर्म जुपिटर (Roaster planets or hot Jupiters). वैज्ञानिक ऐसे ग्रहों के बनने का कारण नहीं जानते हैं, लेकिन मेरी जानी गई खोज से मैंने इनके बनने का कारण आगे लिखा है।

4. ब्रह्माण्ड में ब्लैक होल Black holes हैं; लेकिन जवान और विशाल गैलेक्सी में ब्लैक होल न हो कर बिल्कुल ब्लैक होल जैसी हरकत वाली उपस्थितियाँ हैं, जिनको मैंने नाम दिया है पम्पिंग होल Pumping hole. वैज्ञानिक पम्पिंग होल को भी गलत मूल जानकारी के कारण से ब्लैक होल ही समझ रहे हैं।

5. सन् 1930 में एक वैज्ञानिक ने जाना कि गैलेक्सी में डार्क मैटर dark matter है, जो हमें नहीं दिखती और सन् 1998 में वैज्ञानिकों ने जाना कि हमारा ब्रह्माण्ड गतिवर्धक तेजी acceleration से बाहर की ओर को बढ़ और फूल रहा है। इसका कारण वैज्ञानिकों ने समझा कि कोई शक्ति बाहर से ब्रह्माण्ड को खींच रही है और इस खिंचाव शक्ति को वैज्ञानिकों ने नाम दिया डार्क एनर्जी dark energy. मेरी जानी गई खोज के मुताबिक कोई डार्क मैटर नहीं है और जो है वो व्हाइट मैटर white matter है; यानी सूर्य/तारों और ग्रहों आदि से निकलता हुआ वो सब कुछ, जो भौतिकीय अदृश्य है। ब्रह्माण्ड को कोई शक्ति बाहर से नहीं खींच pull रही (यानी डार्क एनर्जी dark energy नहीं है); व्हाइट मैटर की बाहर की ओर को धकेल thrust से हमारा ब्रह्माण्ड बाहर को बढ़ और फूल रहा है।

6. वैज्ञानिकों ने गुरुत्वाकर्षण, चुम्बकीय शक्ति और इलेक्ट्रॉन्स (gravity, magnetism and electrons/electricity) को एक सिद्धांत के रूप में जाना है और इसलिए वैज्ञानिक यह नहीं जान पाए कि यह शक्तियाँ किस कारण से हैं? मेरी खोज से इनके बारे में कुछ जानने की मैंने पहल की है और मेरी खोज के मुताबिक यह सभी शक्तियाँ भौतिकीय कणों के कारण से हैं।

7. मेरी खोज के मुताबिक बू (खशबू व बदबू) कण भौतिकीय है; जबकि वैज्ञानिक आज भी बहस debate में है कि बू smell/odour क्या है?

वो सब कुछ जो मैंने खगोल विषय से जुड़ता हुआ खोजा है (परन्तु वो विषय जो सौरमंडल और ब्रह्माण्ड के अतिरिक्त है)।

Whatsoever I have understood/discovered (but other than the Solar System and the Universe).

1. वैज्ञानिक डायनासॉर का और उस जैसे बड़े काया के जीवधारियों की विलुप्ति का कारण पृथ्वी से 250 लाख वर्ष पहले किसी विशाल क्षुद्रग्रह के टकराव को मानते हैं। मेरी खोज के मुताबिक ऐसा नहीं है। मेरा खोजा गया कारण जीवों की खुद की बनाई धारणा principle/mode और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण gravity से संभावित है।

2. जब से मनुष्य का दिमाग विकसित हुआ है, शायद तब से मनुष्य यू.एफ.ओ. UFO और दूसरे ग्रहों व ब्रह्माण्ड से आते दूसरे प्राणियों (एलियंस Aliens) के बारे में सोच कर उनकी पृथ्वी पर मौजूदगी को और उनके वायुयानों को सच्चाई मान रहा है। किसी एक गैलेक्सी में तो क्या, कई गैलेक्सियों में एलियंस नहीं तो एलियंस जैसी व/और प्रकार की जीव जितियाँ होंगी। लेकिन वह कभी भी पृथ्वी पर या पृथ्वी के आस-पास किसी भी यंत्र/यान के द्वारा नहीं हो सकते और ना ही कभी हम उनसे किसी भी नई तकनीक से बात कर सकेंगे और ना ही हम उन्हें किसी भी यंत्र/यान के द्वारा देख सकेंगे, क्योंकि.....? (उत्तर मेरी वेबसाइट पर से पढ़िए)।

नोट: जुलाई 2015 में समाचार पत्र के माध्यम से पता चला है कि दूसरे ग्रहों व ब्रह्माण्ड से आते दूसरे प्राणियों (एलियंस Aliens) की खोज के लिए यू.के (U.K.) में 600 करोड़ रूपए किसी संस्था ने दिए हैं।

3. पृथ्वी पर पानी कहाँ से और कैसे आया? वैज्ञानिक क्या जानते हैं; उसे इंटरनेट पर से जानिये। मेरी खोज के मुताबिक वायु की गैसों ऑक्सीजन और हाइड्रोजन (Oxygen and Hydrogen) को पुराण युग में अर्ध जीव कीटाणु (semi-live microbes) ने पानी में बदल दिया है।

4. पृथ्वी पर जो हिम युग आया था, वैज्ञानिकों की उस पर कई धारणाएँ हैं। मेरी खोज के मुताबिक यदि पृथ्वी पर जीवन (प्राणी और वनस्पति) न होता तो पृथ्वी पर कभी भी हिम युग नहीं आ सकता था। अब क्या दुबारा ऐसा हो सकता है? (मेरी वेबसाइट पर से पढ़िए)।

इस खोज की जानकारी की संक्षेप में व्याख्या मेरी लिखी पुस्तक 'वैज्ञानिकों की दिमागी समझ (जो गलत दिशा में है) का पोल - खोल' (2015) के अंतर्गत है और विस्तार में अंग्रेजी भाषा में मेरी वेबसाइट पर है।

खोजी, लेखक और चुनौती देने वाला; नागरिक वैज्ञानिक: **रमेश वर्मा (भारत)**

बी.एस.सी. (1966) गवर्नमेंट कॉलेज (पंजाब विश्वविद्यालय), चण्डीगढ़ (भारत)

खोज को जाना, समझा और सम्पादित भी किया; शौकिया खगोलशास्त्री: **दीपक वर्मा (ऑस्ट्रेलिया)**

50 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि जीतिए: Win award of Rs. 50 Lacs:

यदि कोई मेरी खोज 'ग्रह चलन नियम' को पूर्ण रूप से गलत सिद्ध करता है तो उसे मैं 50 लाख रुपये प्रोत्साहन राशि देने के लिए बाध्य हूँ। मेरी खोज को पढ़िए और प्रोत्साहन राशि जीतने का अवसर मत छोड़िए। (काश! मेरे पास खरबों रुपये होते, तो मैं घोषित राशि अरबों रुपये की कर देता, लेकिन जो राशि घोषित की है उसे तो मैं अपनी प्रोपर्टी बेच कर दे ही दूँगा।)

नोट: उत्तर, सुझाव व टिप्पणी लिख कर या ई-मेल से ही भेजिए। कोई फोन, मोबाइल व एस.एम.एस. नहीं और न ही जुबानी उत्तर सुझाव व टिप्पणी चाहिए। (क्योंकि वैज्ञानिकी प्रश्न व उत्तर सोच समझ कर किया और दिया जाता है, यह कोई राजनीति political सम्बन्धित विषय नहीं है जैसा कि राजनीतिज्ञ Politicians किसी मीडिया Media को प्रश्नों का उत्तर देते हैं)।

डाक पता: (प्रो.: - रमेश वर्मा); टूरु एस्ट्रोनेमी एण्ड साइंसिज, 175, औद्योगिक क्षेत्र, फेज-2, चण्डीगढ़ - 160002 (भारत)

Postal address: (Prop.: - Ramesh Varma); True Astronomy and Sciences, 175, Industrial Area, Phase-2, Chandigarh-160002 (INDIA)

ई-मेल: ramesh_varma@newtonugeam.com

वेबसाइट: www.newtonugeam.com

मेरे कुछ प्रश्न; जिनका उत्तर आपसे व वैज्ञानिकों से चाहिए।

प्रश्न बहुत ही सरल विज्ञान (भौतिक विज्ञान Physics और खगोल विज्ञान Astronomy) पर आधारित हैं; जो मैट्रिकुलेट Matriculate व विज्ञान में ग्रेजुएट Science Graduate यानी B.Sc. पढ़ा - लिखा हो, प्रश्नों का उत्तर दे सकता है।

यदि आपने स्कूल/कॉलेज में विज्ञान नहीं भी पढ़ा है और आप समझ रखते हैं; तो भी आप इन सरल प्रश्नों को समझ कर उत्तर देने में सक्षम हैं।

प्रश्नों का उत्तर व चुप रहना सिद्ध करता है कि जो जानकारी वैज्ञानिकों कि इन विषयों पर है, वो गलत है।

श्रेणी न. 4: मेरे कुछ प्रश्न जिनका उत्तर वैज्ञानिकों से चाहिए।

PART No. 4: Some of my queries; answers of which are required from the concerned Scientists.

नोट: उत्तर देने के लिए प्रश्न, जिनका उत्तर वैज्ञानिकों से चाहिए:

प्रश्न नीचे लिखे विवरण (जानकारी) के कुछ पन्नों के बाद क्रमांक 'क' और 'ख' के अन्तर्गत हैं।

प्रश्नों की झलक जानकारी और आपकी जानकारी के लिए खोजी का उत्तर (लेकिन वैज्ञानिकों से उत्तर लेना है):

• ऐसी कौन सी शक्ति (मैग्नेटोस्फेयर न होते हुए भी) ग्रह शुक्र Venus के पास है; जिसके कारण से शुक्र की ठोस सतह पर (पृथ्वी की अपेक्षा) कम गुरुत्वाकर्षण होते हुए भी और सूर्य के समीप होने पर तीव्र सोलर विंड की धकेल का सामना करते हुए ग्रह शुक्र Venus की सतह के ऊपर (पृथ्वी की अपेक्षा) बहुत घना और अधिक मात्रा में वातावरण (पृथ्वी की अपेक्षा) है और वातावरण ऊपर से उड़ने की बजाये; 450 लाख कि.मी. पूँछ के रूप में चिपक कर ठहरा हुआ है?

खोजी का उत्तर: ग्रह शुक्र Venus की ठोस सतह पर (पृथ्वी की अपेक्षा) बहुत ज्यादा गुरुत्वाकर्षण gravity है जिसके कारण से सोलर विंड की अधिक धकेल भी नाकाम होकर शुक्र अधिक वातावरण पकड़े हुए है। यह घटना Phenomenon इसलिए है कि ग्रह शुक्र के ठोस भाग की असली औसत घनत्वता real mean density पृथ्वी की अपेक्षा बहुत ज्यादा है।

• ग्रह बुध Mercury में कौन सी ऐसी शक्ति है, जो ग्रह बुध Mercury को (पृथ्वी की अपेक्षा) बहुत छोटा (पृथ्वी का 0.056 भाग) होते हुए और पृथ्वी से कम औसत घना होते हुए भी सूर्य के समीप होने पर तीव्र और घनी सोलर विंड (पृथ्वी की अपेक्षा) का सामना करते हुए सूर्य के बहुत समीप डटे रहने का अंजाम दे रही है?

खोजी का उत्तर: ग्रह बुध Mercury की असली गुरुत्वाकर्षण gravity बहुत ज्यादा है, जिसके कारण से बुध सूर्य की तीव्र

और घनी सोलर विंड का सामना करते हुए सूर्य के समीप है। यह इसलिए है कि ग्रह बुध के ठोस भाग की असली औसत घनत्वता real mean density दोनों ग्रहों, शुक्र और पृथ्वी से बहुत ज्यादा है। जो दिशा side सूर्य की ओर होती है वहाँ की सतह पर सबसे ज्यादा गुरुत्वाकर्षण बना रहता है। (इसका कारण वेबसाइट पर ग्रह बुध की धीरे घूमने की गति slow spin speed के अंतर्गत पढ़िए)।

• ग्रह शुक्र Venus, के पास कौन सी ऐसी शक्ति है जिससे ग्रह शुक्र Venus के ठोस भाग पर सूर्य की सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल का शुक्र को सूर्य से अधिक दूरी (केन्द्रपसारक बल centrifugal force के सिवा दूरी) पर धकेलने का कोई असर effect नहीं होता; जबकि सोलर विंड की धकेल ने वातावरण को खींच कर 450 लाख किलोमीटर लम्बा कर दिया है?

खोजी का उत्तर: यदि सोलर विंड की धकेल न होती तो ग्रह शुक्र Venus, सूर्य के बहुत निकट होता।

सच तो यह है कि यदि सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल न होती तो सौरमंडल/ब्रह्माण्ड अस्तित्व में ही न होता। (जब वैज्ञानिकों ने ग्रह चलन नियम बनाये थे तब सोलरविंड के बारे में कोई नहीं जनता था। अब जब वैज्ञानिक सोलरविंड की धकेल को समझ गए हैं, तो पुराने सभी ग्रह नियमों को दुबारा से लिखना होगा।)

नोट: इस भाग में आगे लिखे प्रश्नों और व्याख्या को बहुत अच्छी तरह समझने के लिए पीछे लिखी श्रेणी न. 1 के अंतर्गत भाग न. 13 जिसका शीर्षक है 'सोलर विंड solar wind कैसे ग्रह बुध Mercury और ग्रह शुक्र Venus की औसत घनत्वता mean density पर सवालिया कारण दर्शाती है?' यदि उचित समझें; उसे दुबारा पढ़ने की कृपा करें।

प्रश्नकर्ता: रमेश वर्मा (भारत)

मेरे कुछ सरल प्रश्न, जो खगोल और भौतिक विज्ञान Astronomy and Physics पर आगे कुछ पन्नों के बाद क्रमांक 'क' और 'ख' के अन्तर्गत लिखे हैं; मुझे उन प्रश्नों का उत्तर देने (व किसी वैज्ञानिक से दिलवाने) की कृपा करें।

प्रश्नों से पहले, वैज्ञानिकों से ली गई और नीचे लिखी कुछ जानकारियाँ जिनकी आवश्यकता उत्तर के लिए है: जिसे वैज्ञानिक जानते और मानते भी हैं और इस पर दुनिया की मोहर stamp भी लग चुकी है।

(1) वैज्ञानिकों ने उपकरणों से जाना कि ग्रहों (बुध, शुक्र, पृथ्वी और मंगल) की सूर्य से कितनी दूरी है।

ग्रह बुध Mercury: 58,000,000 कि.मी.

ग्रह पृथ्वी Earth: 149,600,000 कि.मी.

ग्रह शुक्र Venus: 108,000,000 कि.मी.

ग्रह मंगल Mars: 277,900,000 कि.मी.

(2) वैज्ञानिकों ने उपकरणों से जाना कि ग्रहों के ठोस भाग का व्यास diameter क्या है; जो कि नीचे लिखा है।

ग्रह बुध Mercury: व्यास: 4878 कि.मी.

ग्रह पृथ्वी Earth: व्यास: 12756 कि.मी.

ग्रह शुक्र Venus: व्यास: 12104 कि.मी.

ग्रह मंगल Mars: व्यास: 6787 कि.मी.

यानी:

- ग्रह बुध Mercury का व्यास diameter पृथ्वी के व्यास की तुलना में बहुत छोटा है; बुध, पृथ्वी के आकार Volume का सिर्फ 0.056 भाग (यानी 1/18 भाग) है। ग्रह बुध के व्यास diameter को देखते हुए; पृथ्वी का व्यास 3 गुणा बुध से बड़ा है और आकार volume को देखते हुए यदि हम 18 बुध जैसे ग्रहों को तोड़ कर एक बनाये तो पृथ्वी के बराबर का ग्रह बनेगा।



- ग्रह शुक्र Venus का व्यास diameter भी पृथ्वी के व्यास से छोटा है।

(3) वैज्ञानिकों ने प्रयोग practical से पृथ्वी की औसत घनत्वता mean density जान कर; दूसरे सभी और ग्रहों की औसत घनत्वता mean density सदियों पुराने जाने-माने ग्रह चलन नियम से गणना calculation करके जानी हैं और वो नीचे लिखी हैं।

ग्रह बुध Mercury: औसत घनत्व: 5.42 ग्र. /से³

ग्रह पृथ्वी Earth: औसत घनत्व: 5.52 ग्र. /से³ (सही correct)

ग्रह शुक्र Venus: औसत घनत्व: 5.25 ग्र. /से³

ग्रह मंगल Mars: औसत घनत्व: 3.94 ग्र. /से³

यानी:

- ग्रह बुध की औसत घनत्वता mean density पृथ्वी की अपेक्षा कम है। ग्रह बुध पृथ्वी की अपेक्षा हल्का और बहुत छोटा भी है। (सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल प्रभाव को बहुत सरलता से समझने के लिए मानो ग्रह बुध एलूमिनियम धातु का बना है और एक बहुत छोटे आकार का गोला है जबकि पृथ्वी लोहे की बनी है और आकार में भी बहुत बड़ी है)।
- ग्रह शुक्र Venus की औसत घनत्वता mean-density, पृथ्वी से कम जानी गई है। यानी ग्रह शुक्र Venus छोटा और कम औसत घनत्वता होने के कारण से; वैज्ञानिकों के अनुसार ग्रह शुक्र की सतह पर पृथ्वी की सतह की अपेक्षा बहुत कम गुरुत्वाकर्षण gravity है।

(4) ग्रहों के वातावरण पर सोलरविंड solar wind और भौतिक किरणों की धकेल thrust का प्रभाव:

- सूर्य से निकलती सोलर विंड और भौतिक किरणों का प्रभाव ग्रहों के वातावरण पर पड़ता है; जो ग्रह सूर्य के निकट हैं उनपर अधिक और जो दूर हैं उन पर कम। (वैज्ञानिकों को सोलर विंड का प्रभाव वातावरण पर पड़ता हुआ तो दिखता है लेकिन ग्रह के ठोस भाग पर जो धकेल बनती है, वह न ही दिखती है और न ही उनकी समझ में आ रही है)।

- सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल के कारण से ग्रह बुध Mercury पर नाम मात्र ही वातावरण बचा है और दूर तक ग्रह मंगल Mars का एक-तिहाई वातावरण भी उड़ गया है। वैज्ञानिकों की जानकारी के मुताबिक पृथ्वी के वातावरण को चुम्बकीय प्रभाव ने सोलर विंड से बहुत बचा कर रखा हुआ है। सोलर विंड ने अपनी तीव्र धकेल शक्ति से ग्रह शुक्र Venus के वातावरण को एक लम्बी पूँछ के रूप में खींच कर 450 लाख किलोमीटर की लम्बाई में ढाल रखा है (जैसा कि नीचे के चित्र में दर्शाया गया है, जिसे नासा NASA ने अंतरिक्षयान के माध्यम से खींचा है)।



नासा NASA की जानकारी: सोलर विंड की तीव्र धकेल ने ग्रह शुक्र के वातावरण को खींच कर एक 450 लाख कि.मी. लम्बी पूँछ में बदल दिया है। जो तकरीबन चाँद के पास तक खिंच जाती है।

- वैज्ञानिकों ने उपकरणों से जाना कि ग्रह शुक्र Venus पर पृथ्वी के वातावरण की अपेक्षा 90 गुना घना वातावरण है। घने के अलावा बहुत अधिक मात्रा में भी वातावरण ग्रह शुक्र पर है। (यह लिखा कारण बहुत समझने वाला है कि जैसा वैज्ञानिक मानते हैं कि पृथ्वी का वातावरण चुम्बकीय प्रभाव ने सोलर विंड से बहुत बचा कर रखा हुआ है और यदि पृथ्वी पर चुम्बकीय प्रभाव न होता तो ऐसा होने से पृथ्वी पर कम वातावरण बचने से ग्रह शुक्र Venus पर पृथ्वी की अपेक्षा (तुलना से) और भी अधिक मात्रा में वातावरण होता)।

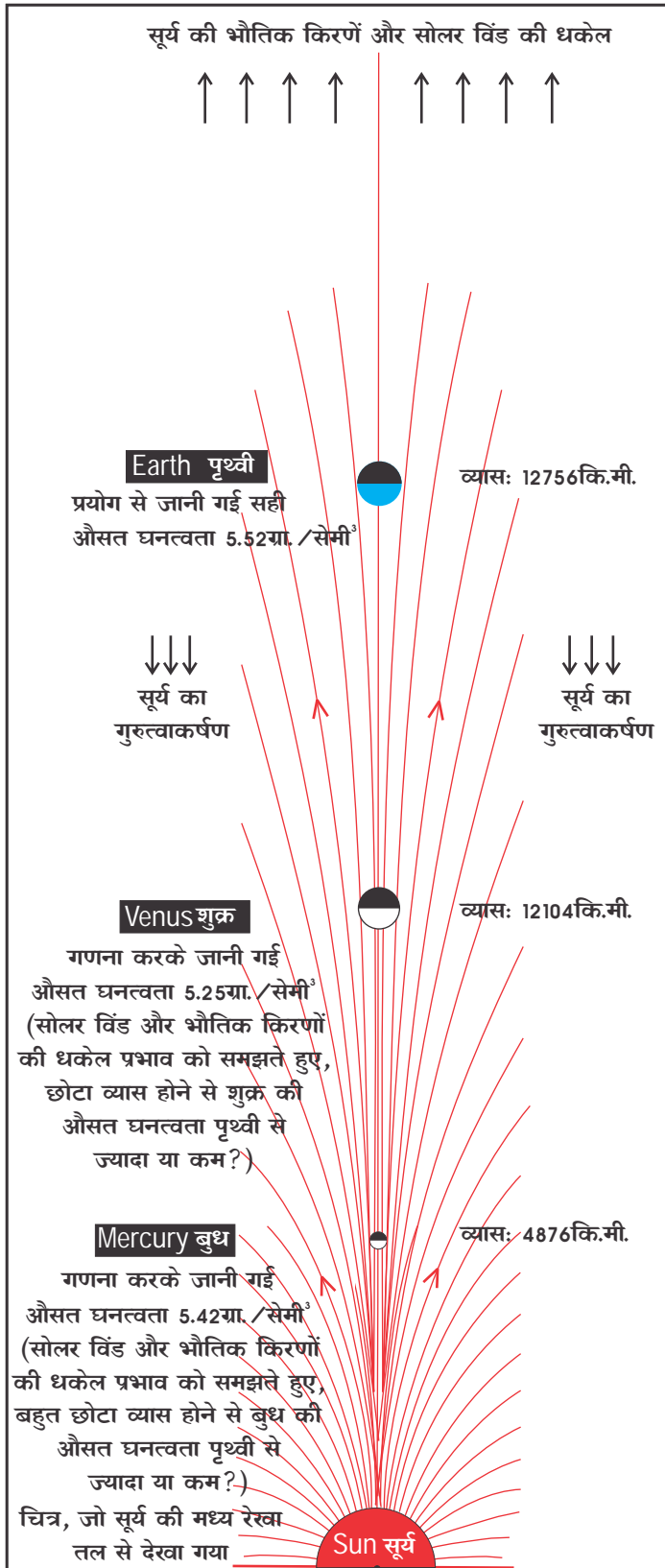
- ग्रह शुक्र Venus, पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य के बहुत निकट है। ऐसा होने से ग्रह शुक्र पर पृथ्वी की अपेक्षा बहुत तीव्र सोलर विंड की धकेल है।

यानी:

- ग्रह शुक्र; पृथ्वी और बुध के मध्य में है और सोलरविंड की धकेल शक्ति ग्रह शुक्र Venus के वातावरण को 450 लाख कि.मी. लम्बी पूँछ में खिंचते देख; यह तो मानने वाली बात है कि पृथ्वी पर सोलर विंड की धकेल प्रभाव ग्रह बुध की अपेक्षा से बहुत ही कम होगी। बड़ा और घना ग्रह (पृथ्वी), कम सोलर विंड शक्ति का सामना करते हुए सूर्य से बहुत दूरी पर है और जो ग्रह (बुध) बहुत छोटा (पृथ्वी का 0.056 भाग) और कम घना भी है, वो सूर्य की बहुत अधिक और तीव्र धकेल का सामना करता हुआ, सूर्य के बहुत करीब है। ग्रह बुध का व्यास diameter बहुत छोटा है; यदि हम माने कि ग्रह बुध जैसे व्यास वाला ग्रह और जिसकी औसत घनत्वता भी पृथ्वी के सामान्य हो और दोनों (ग्रह पृथ्वी और माना गया ग्रह) पृथ्वी की परिक्रमा दुरी orbital distance पर हो तो माने गए छोटे व्यास के कारण से, छोटे ग्रह पर 264% अधिक सोलर विंड की धकेल, पृथ्वी की अपेक्षा होगी। (मेरी इस गणना किए गए कारण से छोटे ग्रह और कम औसत घनत्वता के होने से, छोटे ग्रह (बुध जितने आकार के ग्रह) को तो सूर्य की सोलर विंड की धकेल के कारण से पृथ्वी से भी दूर होना चाहिए: परन्तु ऐसा नहीं है)।

खोजी:

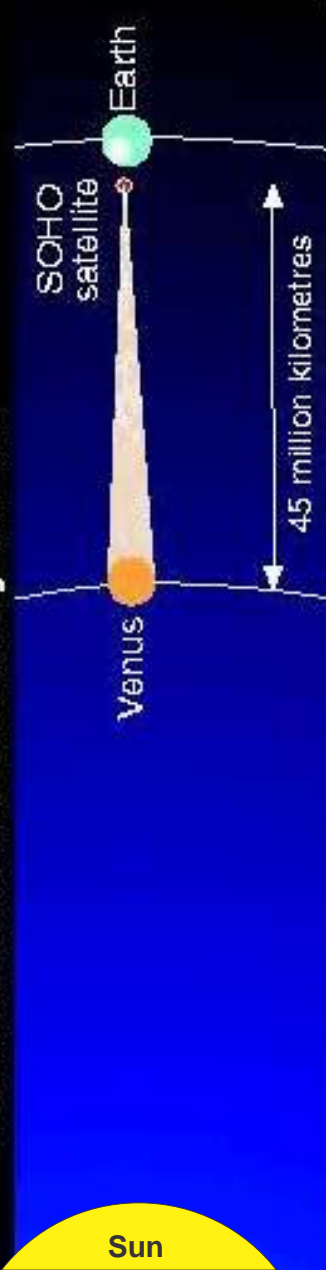
- सन् 1997 में SOHO Satellite से ली गई तस्वीर जानकारी देती है कि सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल ग्रह शुक्र Venus पर इतनी तीव्र, घनी और शक्तिशाली हैं कि धकेल से जो ग्रह शुक्र का भौतिक वातावरण है उसे गोल Shell न रहने दे कर उसे खींच कर 450 लाख किलोमीटर लम्बी पूँछ में बदल दिया है, जो तकरीबन पृथ्वी के पास यानी चन्द्रमा तक पहुँच जाती है।



प्रश्न: - सूर्य की भौतिक किरणों और सोलर विंड की धकेल से ग्रह बुध Mercury पृथ्वी की अपेक्षा इतना छोटा होकर और कम औसत घनत्व से कैसे सूर्य के समीप हो सकता है? वैज्ञानिकों से इसका उत्तर चाहिए।

Satellite catches Venus by the tail

Tail of Venus: credit Jeff Hecht, NewScientist Magazine May 31, 1997.



Solar-wind forms 45 million km long tail with the planet Venus by the blow of solar-ejects and this has been noticed in the year 1997.

यह जानी गई सच्चाई सिद्ध करती है कि:

(1) यदि सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल न होती तो ग्रह शुक्र, सूर्य के अधिक समीप होता (यानी सभी ग्रहों की सूर्य से दूरी कुछ कम होती)। ग्रह, सूर्य से सिर्फ केन्द्रपसारक बल centrifugal force से ही दूरी पर नहीं; दूरी के और भी कारण हैं जिन्हें नहीं समझा गया है।

(2) यदि सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल; ग्रह शुक्र पर इतनी तीव्र, घनी और शक्तिशाली है तो ग्रह शुक्र पृथ्वी से छोटा हो कर और जानी गई कम औसत घनत्वता से, पृथ्वी से आगे सूर्य की ओर को नहीं हो सकता। ग्रह शुक्र जिस स्थिति में है, वहाँ पर वो तभी हो सकता है जब ग्रह शुक्र के ठोस भाग की औसत घनत्वता पृथ्वी से कम न होकर कहीं अधिक हो।

(3) यदि सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल; ग्रह शुक्र पर इतनी तीव्र, घनी और शक्तिशाली है तो ग्रह बुध जो सूर्य के बहुत निकट है, उस पर तो बहुत अधिक धकेल प्रभाव होगा। ग्रह बुध; ग्रह शुक्र और पृथ्वी दोनों से बहुत छोटा है और ग्रह बुध की जानी गई औसत घनत्वता भी पृथ्वी से कम है। बहुत छोटा ग्रह, सूर्य के समीप तभी हो सकता है; जबकि ग्रह बुध की औसत घनत्वता पृथ्वी से कम न हो कर कहीं अधिक हो।

(4) **नोट:** तीनों ग्रह (पृथ्वी, शुक्र और बुध Earth, Venus and Mercury) पर जो सोलर

विंड और भौतिक किरणों की धकेल है, उसकी एक दूसरे ग्रह से तुलना करते वक्त जो भार mass सूर्य और ग्रहों का जाना गया है उसमें एक कारण वैज्ञानिकों की समझ से अभी बाहर है। कारण है उपग्रह चन्द्रमा Moon का भार mass जिसे पृथ्वी के भार mass से जोड़ना होगा। ग्रह पृथ्वी और उपग्रह चन्द्रमा एक दूसरे से दूरी पर जुड़े हैं; इसलिए पृथ्वी का असली भार mass चन्द्रमा के भार को जोड़ कर हैं। (यदि चन्द्रमा को खींच कर दूर भगा दिया जाये तो पृथ्वी का जोड़ भार mass कम होने से, पृथ्वी सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल से सूर्य से और अधिक दूरी पर चली जाएगी)।

प्रश्न (क) और (ख) के अंतर्गत; जिनका उत्तर वैज्ञानिकों से चाहिए।

जो कुछ भी मैंने अपनी खोज से ग्रहों के चलन working mechanism of the planets के बारे में लिखा है, वो सही है। मेरी सभी खोजों (phenomena) पर वैज्ञानिकों के लिए प्रश्न बनाने मुश्किल हैं; क्योंकि मैंने देखा है कि वैज्ञानिक इधर-उधर की हाँक कर बच्चों/विद्यार्थियों को उनके प्रश्नों के उत्तर दे देते हैं। इसलिए मैंने कुछ ही प्रश्न बनाये हैं, जिन पर वैज्ञानिक उत्तर देते समय इधर-उधर की नहीं हाँक सकते हैं और जिनके उत्तर वैज्ञानिकों से चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर (व मौन रहना) वैज्ञानिकों का भांडा फोड़ कर सच्चाई को सामने ला रहे हैं। मुझको वैज्ञानिकों ने सन् 2007 से आज तक ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया है और आपको मेरी खोज की व्याख्या को पढ़ कर अपनी समझ से खुद उत्तर देने की कोशिश करनी है यदि आप उत्तर न पा सकें तो फिर आप उनसे (प्रोफेसरों/अध्यापकों से) उत्तर देने को बोलिए जो आपको यह सब विषय पढ़ा रहे हैं या इन विषयों पर जो जानकारी दे रहे हैं या किसी वैज्ञानिक से उत्तर लें और मुझे उत्तर भेजने की कृपा करें। प्रश्न नीचे लिखे हैं।

(क) ग्रहों का सूर्य (तारा) से दूरी पर बने रहने के कारण:

वैज्ञानिकों की जानकारी के मुताबिक सभी ग्रह, सूर्य से एक ही कारण (केंद्रीय पसारक बल centrifugal force) से दूरी पर हैं। जबकि वैज्ञानिकों की ही जानकारी के मुताबिक सोलर विंड की धकेल ग्रह शुक्र Venus के वातावरण को खींच कर 450 लाख किलोमीटर तक ले जाती है। (सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल सभी ग्रहों पर अपनी धकेल डालती हैं। ग्रह जितना सूर्य के निकट है; उतनी ही तीव्र और घनी यानी शक्तिशाली powerful सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल होती है; धकेल thrust/push ग्रह के ठोस भाग और उसके गैसीय वातावरण दोनों पर होती है)।

(1) प्रश्न: ग्रह बुध Mercury के बारे में:

(i) सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल thrust प्रभाव क्या सिर्फ; ग्रह के वातावरण पर ही धकेल डालती है और ग्रह के ठोस भाग पर नहीं (यानी ग्रह बुध पर नहीं)? (क्या ग्रह रेल पटरी पर चिपक कर चल कर सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं, जो ऐसा है?)

उत्तर Answer:.....

(ii) परिक्रमण गति orbital motion से दोनों ग्रह (पृथ्वी और बुध) सूर्य से दूर जाने की कोशिश में रहते हैं और सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल भी दोनों ग्रहों को सूर्य से दूर भगाने में शक्ति लगाती है। सोलर विंड की धकेल होते हुए भी बहुत छोटा और कम घना (हल्का) ग्रह बुध कैसे सूर्य के समीप रह रहा है जबकि बड़ी और अधिक घनी (भारी) पृथ्वी सूर्य से बहुत दूर है। ऐसा (छोटा और कम घना ग्रह) होने से सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल से तो ग्रह बुध को पृथ्वी से भी दूर होना चाहिए था; तो फिर ग्रह बुध का सूर्य के समीप होने का कारण क्या है? (क्या ग्रह बुध सूर्य से बहुत मजबूत स्टील रस्सी steel rope से बँधा हुआ है, जो ऐसा है?)

उत्तर Answer:.....

(iii) मानों; यदि हमारे पास ऐसा रिमोट कंट्रोल remote control हो, जिसे दबाने से सूर्य से आती भौतिक किरणों और सोलर विंड कुछ समय के लिए थम जायें। तो क्या ग्रह बुध का परिक्रमण अर्ध व्यास orbital distance उतना ही रहेगा (सूर्य से दूरी), जितना अब है या फिर कुछ कम हो जायेगा?

उत्तर Answer:.....

(2) प्रश्न: ग्रह शुक्र Venus के बारे में:

(i) सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल क्या सिर्फ; ग्रह शुक्र के वातावरण पर ही धकेल डालती है जिसे खींच कर 450 लाख किलोमीटर का कर दिया है और ग्रह के ठोस भाग पर नहीं (यानी ग्रह शुक्र पर नहीं)?

उत्तर Answer:.....

(ii) परिक्रमण गति orbital motion से दोनों ग्रह (पृथ्वी और शुक्र) सूर्य से दूर जाने की कोशिश में रहते हैं और सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल भी दोनों ग्रहों को सूर्य से दूर भगाने में शक्ति लगाती है। ऐसी धकेल होते हुए भी छोटा और कम घना (हल्का) ग्रह शुक्र कैसे सूर्य के समीप रह रहा है जबकि बड़ी और अधिक घनी (भारी) पृथ्वी सूर्य से अधिक दूरी पर है। ऐसा (छोटा और कम घना ग्रह) होने से सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल से तो ग्रह शुक्र को पृथ्वी से भी दूर होना चाहिए; तो फिर ग्रह शुक्र का सूर्य के समीप (पृथ्वी की अपेक्षा) होने का कारण क्या है?

उत्तर Answer:.....

(iii) मानों; यदि हमारे पास ऐसा रिमोट कंट्रोल remote control हो, जिसे दबाने से सूर्य से आती भौतिक किरणों और सोलर विंड कुछ समय के लिए थम जायें। तो क्या ग्रह शुक्र का परिक्रमण अर्ध व्यास orbital distance उतना ही रहेगा (सूर्य से दूरी), जितना अब है या फिर कुछ कम हो जायेगा?

उत्तर Answer:.....

(ख) ग्रहों की औसत घनत्वता mean density और सूर्य से दूरी:

वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की औसत घनत्वता mean density, पृथ्वी पर प्रयोग करके जानी है (जो सही correct है) और दूसरे सभी ग्रहों की न्यूटन के नियम से गणना करके जानी है। जब उन्नीसवीं सदी में ग्रहों की औसत घनत्वता को जानने के लिए गणना की थी तब किसी को सोलर

विंड की धकेल के बारे में कुछ भी पता नहीं था। अब, जब सोलर विंड की धकेल को बीसवीं सदी के मध्य से जान लिया गया है तो पहले की गई गणना से औसत घनत्वता कैसे सही हो सकती है? इस सच्चाई को दुनिया के सम्मुख रखने के लिए मुझे आपसे* कुछ प्रश्नों के उत्तर चाहिए।

***आपसे:** विद्यार्थी या कोई भी जो इस विषय पर जानकारी रखता है या जानकारी को समझने का इच्छुक है; वो उत्तर दे सकता है। बहुत अधिक वैज्ञानिकी जानकारी की आवश्यकता नहीं है; सिर्फ मैट्रिक Matriculate से विज्ञान में स्नातक Graduation in Science तक की ही आवश्यकता है। यदि आप उत्तर न दे पा सकें तो किसी अध्यापक या वैज्ञानिक से उत्तर ले कर मुझको भेजने की कृपा करें।

(1) प्रश्न: ग्रह बुध Mercury के बारे में:

ग्रह बुध की जानी गई औसत घनत्वता पृथ्वी की अपेक्षा कम है और आकार बहुत छोटा है; यानी ग्रह बुध पृथ्वी का सिर्फ 0.056 भाग है, तो फिर किस कारण से ग्रह बुध बहुत तीव्र सोलर विंड की धकेल का सामना कर सूर्य के बहुत समीप हैं?

उत्तर Answer:.....

(2) प्रश्न: ग्रह शुक्र Venus के बारे में:

(i) ग्रह शुक्र की जानी गई औसत घनत्वता पृथ्वी की अपेक्षा कम है और आकार बहुत छोटा है। तो फिर किस कारण से ग्रह शुक्र (पृथ्वी की अपेक्षा) बहुत तीव्र सोलर विंड की धकेल का सामना कर सूर्य के समीप है?

उत्तर Answer:.....

.....
.....
.....

(ii) ग्रह शुक्र Venus की गणना करके जानी गई औसत घनत्वता mean density पृथ्वी से कम है और आकार भी छोटा है; यानी ग्रह शुक्र की सतह पर गुरुत्वाकर्षण surface gravity भी पृथ्वी की अपेक्षा से कम है। ग्रह शुक्र, पृथ्वी से बहुत अधिक सोलर विंड का सामना कर रहा है। किस कारण से ग्रह शुक्र, पृथ्वी से 90 गुना घना वातावरण अपने ठोस भाग पर पकड़ कर रख रहा है जबकि सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल ने बहुत दूर के ग्रह मंगल Mars का एक तिहाई वातावरण उड़ा दिया है?

उत्तर Answer:.....

(iii) वैज्ञानिकों की जानकारी के अनुसार; पृथ्वी का वातावरण, पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति से जो वातावरण के ऊपर मैग्नेटोस्फेयर बनाती है, उसने सोलर विंड से उड़ने से बचाकर रखा हुआ है। और वैज्ञानिकों की जानकारी के अनुसार; ग्रह शुक्र Venus पर नाम मात्र का ही चुम्बकीय मैग्नेटोस्फेयर है। इस कारण को जान कर और ऊपर लिखे कारण न: (ii) को मिला कर यह कैसे और किस कारण से सम्भव है कि ग्रह शुक्र पर 90 गुना पृथ्वी की अपेक्षा वातावरण सोलर विंड और भौतिक किरणों की धकेल को सहते हुए ठहरा हुआ है।

उत्तर Answer:.....

(ऊपर लिखे गए प्रश्न; अंग्रेजी भाषा में भी मेरी वेबसाइट पर शीर्षक 'स्पार्क SPARK' और 'साइंस टोपपल्ड SCIENCE TOPPLED' के अंतर्गत हैं, इन प्रश्नों का उत्तर आपसे या वैज्ञानिकों से चाहिए।)

50 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि जीतिए: Win award of Rs. 50 Lacs:

यदि कोई मेरी खोज 'ग्रह चलन नियम' को पूर्ण रूप से गलत सिद्ध करता है तो उसे मैं 50 लाख रुपये प्रोत्साहन राशि देने के लिए बाध्य हूँ। मेरी खोज को पढ़िए और प्रोत्साहन राशि जीतने का अवसर मत छोड़िए। (काश! मेरे पास खरबों रुपये होते, तो मैं घोषित राशि अरबों रुपये की कर देता, लेकिन जो राशि घोषित की है उसे तो मैं अपनी प्रोपर्टी बेच कर दे ही दूँगा।)

नोट: उत्तर, सुझाव व टिप्पणी लिख कर या ई-मेल से ही भेजिए। कोई फोन, मोबाइल व एस. एम. एस. नहीं और न ही जुबानी उत्तर सुझाव व टिप्पणी चाहिए। (क्योंकि वैज्ञानिकी प्रश्न व उत्तर सोच समझ कर किया और दिया जाता है, यह कोई राजनीति political सम्बन्धित विषय नहीं है जैसा कि राजनीतिज्ञ Politicians किसी मीडिया Media को प्रश्नों का उत्तर देते हैं)।

डाक पता: (प्रो.: - रमेश वर्मा); टूरु एस्ट्रोनोमी एण्ड साइंसिज, 175, औद्योगिक क्षेत्र, फेज - 2, चण्डीगढ़ - 160002 (भारत)
Postal address: (Prop.: - Ramesh Varma); True Astronomy and Sciences, 175, Industrial Area, Phase-2, Chandigarh-160002 (INDIA)

ई-मेल: ramesh_varma@newtonugeam.com वेबसाइट: www.newtonugeam.com